खोए हुये क्षण

प्यारे हताश

खोए हुये क्षण

mhmgc@lineone.net

mhmgc@lineone.net

प्यारे हताश

परिचय

नाम	:	प्यारे हताश
पिता का नाम	:	रघु नाथ हण्डू
जन्म स्थान	:	अनन्तनाग, कश्मीर
पुस्तक	:	"खोए हुये क्षण"
प्रकाशन वर्ष	:	2002 ईस्वी
संख्या	:	पाँच सौ
मूल्य	:	एक सौ रुपए

प्रेस जे. के. आफसेट प्रिंटर्स, जामा मजजिद, दिल्ली-110 006 द्वारा मुद्रित

कम्पयूटर कम्पोज़िंग	:	रिंकू कौल
मिलने का पता	:	

1. सतीसर (पंजीकृत)
   दूरदर्शन गेट लेन, ओल्ड जानीपुर,
   जम्मू – 180007
2. किताब घर, एम.ए.रोड़
   श्रीनगर, कश्मीर, 190001
3. किताब घर,
   कनाल रोड, जम्मू

नीरज प्रकाशन, जम्मू तवी

दिल में ज़ौक़े वसल व यादे यार बाक़ी नहीं,
आग इस घर में लगी ऐसी कि जो था जल गया।।

—ग़ालिब

इस फ़िक्रे बे करां में हैं डूबे हुए "हताश"
लमहाते गुमशुदा को कहां कीजिए तलाश ?

आगामी कल का विश्वास

"खोाए हुए क्षण" प्यारे हताश की उर्दू गज़लों का संग्रह है। उर्दू गज़ल की लोकप्रियता देखते हुए इन्हें कवि ने नागरी लिपि में रूपांतरित कराके हिंदी के पाठकों के लिए अपनी कविता की उपलब्धता बढ़ाई है। शब्दावली तथा शैली की दृष्टि से ये गज़लें सरल तथा बोधगम्य है इसलिए नागरी में इनको उपलब्ध कराने का स्वागत किया जाना चाहिए।

हताश ऐसे कवि है जिन्हें मातृभाषा कश्मीरी के अतिरिक्त उर्दू तथा हिंदी पर अच्छा अधिकार है। हिंदी में भी उन्होंने स्वतंत्र कविताएं लिखी है, बल्कि यों भी कह सकते है कि उनकी उर्दू कविता में उनके हिंदी भाषा अथवा साहित्य–ज्ञान के संकेत मिलते है। इस कारण भी प्रस्तुत गज़लें हिंदी के सामान्य पाठक को आकर्षित करेंगी – ऐसा विश्वास किया जा सकता है।

उर्दू कविता, विशेषकर उर्दू गज़ल का एक मूलभूत स्वभाव है – सार्वजनिकता। उर्दू कवि का नितांत व्यक्तिगत प्रेम भी, आम तौर पर, सार्वजनिक प्रतिक्रियाओं के चित्रण में अभिव्यक्ति पाता है। प्रस्तुत ग़ज़लें भी इस तरह की विशिष्ठता लिए हुए हैं। ऐसा नही कि उर्दू गज़ल में प्राइवेट या केवल स्वयं तक सीमित अति वैयक्तिक भावनाओं की अभिव्यक्ति की कोई परंपरा नही। ऐसी परंपरा "मीर" और "ग़ालिब" से लेकर आज तक बराबर बनी हुई है और कई गंभीर तथा बहुआयामी

चिंतन के धनी कवि ऐसी रचना कर रहे हैं। ऐसी कविता की मुद्रा सार्वजनिक न होकर सघन आत्मीयता की होती है।

प्यारे हताश की प्रस्तुत गज़लों की सरल संप्रेषणीयता का एक कारण यह है कि ये सादगी के रस से सराबोर हैं। व्यक्ति के तौर पर "हताश" जैसे सरल और सादा हैं, उनकी कविता भी वैसी ही सादा है। उनका पाठक सहज विश्वासी होता है जिससे वे मन खोल के वार्तालाप करते हैं–

ऐसा लगता है यह क़ौल गलत ही होगा
हम जो सुनते थे बुरे का है अंजाम बुरा।

कवि सरल बात में काव्यत्व पैदा करते हुए उसे अप्राकृतिक या चौंकाने वाला मोड़ देकर प्रस्तुत करने के हक़ में नही है।

समझ बैठे हो जिसको ग़ैर यकसर
तुम्हें अपना बनाए क्या करोगे ?

वास्तव में "हताश" करुणा, प्रेम, अपनत्व और भाईचारे का कवि है। आज के विद्वेषी, घृणापूर्ण वातावरण में वे सहज बंधुत्व की आस दोहराते हैं और दोहराते जाते हैं। उनका प्रेम सहज मनुष्यता के लिए है जिसमें करुणा और बंधुत्व की कमी है और यह उन्हें बहुत खलता है। उनका व्यक्तिगत प्रेम चाहे अनचाहे सर्वसाधारण के लिए समर्पित होता जाता है, इसलिए मिलन तथा विरह की व्यक्तिगत छायाएं, उनके यहां समष्टि के लिए शुभेच्छा का रूप लेती हैं –

ऐन मुमकिन है वो फुरसत में इधर आ निकले
उसकी राहों में आंखों को बिछाए रखना।।

होसकता है कि ऐसे शेरों की मुद्रा पारंपरिक हो और शब्दावली को नितांत व्यक्तिगत अर्थ नही दिया गया हो, इसलिए व्यक्तिगत अनुभव सर्वसाधारण के प्रति एक एटीट्यूड बन के रह जाता है। इसप्रकार के शेर इस संग्रह में बहुत मिलेंगे और एक तरह से इनसे कवि के व्यक्तित्व की सामान्य सहजता रेखांकित होती है –

तुम्हारे दिल में जो रच बस गया है
वो तुम से रूठ जाए क्या करोगे?

मिट गए दूसरों के लिए जो यहां
हैं ज़माने में ज़िन्दा वही दोस्तो।

दूर है इनसानियत से किस क़दर
आज का इनसान है कितना बदहवास।

जो आज एक सहरा की सूरत है दोस्तो!
उस गुलिस्तां में हम भी कभी चहचहाए थे।

लेकिन "हताश" सांसारिक प्यार में इतना कभी खो नहीं जाते कि वास्तविकता भुलादें। कश्मीर से बेघर होकर झुलसते मैदानों में भटकने की क्रूर नियति से वे बहुत बेज़ार है। यह और बात है कि स्वभाव की सहिष्णुता के कारण उनका लहजा कभी कडवा नही होजाता –

मेरे करीब थे जो बहुत उनसे दूर हूँ –
सहना पड़ा है दिल को जुदाई का यह अज़ाब।

किस को मालूम है दिल पे जो बीती होगी।
वाकिया कोई जब उसे याद आया होगा।

घर के छूट जाने का दुख "हताश" की कई गज़लों पर आदि से अंत तक छाया हुआ है और कई बार यह कवि को भावुक बना देता है और उनका लहजा विशिष्ट शब्दावली के चयन की प्रतीक्षा नहीं करता। प्रतीक्षा तथा गहन चिंतन कविता के अनुभव को गंभीर तथा विचार वान बनाते हैं।

घर से जो निकले हुए मुद्दत हुई
उस से भी जाता नही घर का ख़याल।

कभी चूमूंगा ख़ाक अपने वतन की
मैं ज़िन्दा सिर्फ इतनी आस पर था।

काश मेरा भी कोई घर होता
यूं भटकता न दरबदर होता।

विस्थापन की गूंज "हताश" के जिन शेरों में सुनाई देती है, उन में निस्संदेह कवि की प्रौढ़ता की झलक मिलती है और यह सत्य सत्यापित होता है कि अनुभव जब कवि–व्यक्तित्व के भीतर का अंग बनता है तो अनुभूति का रूप लेता है। कश्मीर का, आतंकवादियों के जुल्म या विस्थापित होकर भटकने का सीधा उल्लेख न करते हुए ही कवि आंतक तथा भय का

संप्रेषण करता है–

ज़बान पर न लब पर कोई बात थी
ग़ज़ब की भयानक वह रात थी।

कौन है यह अजनबी
कौन है यह हमसफर

रसते बसते घरों को छोड़ आए
है फसाना मुख्तसर अपना।

इन शेरों की खूबी यह है कि इनकी रचना घटना विशेष की प्रेरणा से हुई है पर इन्हे आत्मसात करने के लिए इन्हें सामान्य मानव नियति से जोड़ा जा सकता है। ऐसे चरण पर आकर "हताश" के स्वर में परिपक्वता आती है और उनका कथ्य विश्वसनीय लगता है। वस्तुतः इस संग्रह की गज़लों में परिपक्वता के विकास का एक क्रम पहचाना जा सकता है। अंत तक आते आते हम एक अनुभवी और कुशल कवि से साक्षात्कार करने लगते हैं। "हताश" के ये शेर वास्तव में उनके भाषा तथा भाव दोनों पर अधिकार के अच्छे उदाहरणों के तौर पर उद्धृत किए जा सकते है –

ढलती शाम का साया मैं
रात पड़े घबराया मैं।

ऊपर आग बरसती है
नीचे ठण्डा साया मैं।

कौन यह मुझको तकता है
किसके मन को भाया मैं।

यहां हर एक का दावा है कि तुझ से भी है बढ़कर
मगर यह देखना है कोई तुझसा भी है ज़माने में।

मेरी भी औकात है क्या
अपने जिस्म का साया मैं।

उसकी आखों में था इक कर्ब निहां
उसके सिर से उठगया था आसमां।

बहुत गरीब सही मैं मगर हक़ीर न जान
मेरा यक़ीन कर फरदा का एतबार हूँ मैं।

फरदा (आगामी कल) का विश्वासी कवि प्यारे "हताश" पाठक के मन में अपने कवित्व के प्रति विश्वास जगाता है। यह कोई कम उपलब्धि नहीं।

जम्मू
7–4–1997

(डा॰) रतन लाल शांत

याद आती है वतन की बार बार
दिल मे होती है चुभन सी बार बार

खतम होगी ज़िन्दगी के साथ ही
ज़िन्दगी की यह घुटन सी बार बार

क्या चली आँधी नशेमन ले उड़ी
क्या हुई हालत चमन की बार बार

यह मुहब्बत के सफ़र के मरहले
धूप से झुलसा बदन भी बार बार

दिल शिकस्ता है किसी की याद में
टूट जाता है बदन भी बार बार

आशियाना लुटा कर वीरान सा
हो चुका है यह बदन भी बार बार

कैसे रवेला था मैं आंगन मे कभी
याद आती उस सहन की बार बार

क्या ख़बर जो गुम हुए वो दोस्त भी
जिन से बात करते सुरवों की बार बार

अब कहाँ लम्बे सफ़र का हौसला
अब सताती है थकन सी बार बार

आगया जब दिल में माज़ी का ख्याल
सज गई है अंजुमन सी बार बार

बढ़ गए है कुर्बतों के फ़ासले
हर क़दम है इक थकन सी बार बार

नींद रातों की उड़ाती है "हताश"
यह रज़ाई भी कफ़न सी बार बार

⊙

जब मस्तियों में हो वो छलकता हुआ शबाब
मैं देखता हूँ अपनी निगाहों का इन्तिख़ाब

आती नहीं है रास यह हर एक शख़्स को
होता है कोई कोई मुहब्बत में कामयाब

जो बात भी है साफ़ कहूँगा वो बज़्म में
इस दर्जा खा रहे हैं वो बे सूद पेचोताब

हर एक जान जाएगा ख़ुद अपनी असलियत
तहरीर कर रहा हूँ हक़ाइक़ का ऐसा बाब

मेरे क़रीब थे जो बहुत उन से दूर हूँ
सहना पड़ा है दिल को जुदाई का यह अज़ाब

मेरी सरिश्त में तो हक़ गोई है "हताश"
हर एक झूट बात को करता हूँ बेनक़ाब

⊙

जल रहा है किस का घर
कौन रहता है उधर

भगते हो तुम कहाँ
यह असासा लूट कर

यह भी कैसी ज़िन्दगी
भटकता हूँ दर ब दर

कौन है यह अजनबी
कौन है यह हमसफ़र

बात कुछ बनती नहीं
बात हो जब बे असर

दिल में मुझको दो जगह
मुझको अपना जानकर

हमने क्या चाहा नहीं
शोमिए क़िस्मत मगर

जैसे मुमकिन हो "हताश"
तय करो अपना सफ़र

⊙

शमए–उमीद बहर तौर जलाए रखना
ज़िन्दगी के लिए माहोल बनाए रखना

यह दरिन्दे लो तशद्दुद पे उतर आए हैं
आईना ऐसे दरिन्दों को दिखाए रखना

आग नफ़रत की जो भड़के तो जलादेती है
अपने दिल में तो मुहब्बत को बसाए रखना

कितना गहरा है अंधेरा न भटक जाए कोई
यह गुज़ारिश है चिराग़ों को जलाए रखना

ऐन मुमकिन है वह फुर्सत में इधर आनिकले
उसकी राहों में तू आंखों को बिछाए रखना

क्या करूं अब मेरी आदात में यह शामिल है
हर घड़ी दिल में कोई आस लगाए रखना

ज़िन्दगी के लिए यह कितना ज़रूरी है "हताश"
हौसला दिलका हर आलम में बनाए रखना

इखतियार ऐसी रविश करते नहीं
मोत से तो हम कभी डरते नहीं

जान दे देते हैं हक पर एक बार
दिन में सो सौ बार हम मरते नहीं

यह सरासर इश्क की तवहीन हैं
इस तरह आहें कभी भरते नहीं

वो तो पी जाते हैं इन्सानों का खून
लोग इस दुनिया में क्या करते नहीं

हो गई है हमसे ऐसी क्या ख़ता
आप हम से बात तक करते नहीं

यह वक़ारे इश्क पर देते हैं जान
ये पतंगे शैक से मरते नहीं

हम नहीं चलते गलत रह पर "हताश"
हम ज़माने से कभी डरते नहीं

लोग जो डगमगा से जाते हैं
ज़िन्दगी भर सम्भल नही पाते हैं

चाहिए जो वो छीन लें बढ़ कर
किस लिए आप गिड़गिड़ाते हैं

मौत के रूबरू कहाँ ठहरें
ज़िन्दगी से जो हार जाते हैं

हादिसों की मैं क़द्र करता हूँ
ये मरे हौसले बढ़ाते हैं

जो हैं अहले-नज़र ज़माने में
हर हक़ीकत को जान जाते हैं

दिल में महशर बपा सा होता है
दिन जो माज़ी के याद आते हैं

ए "हताश" उन की बात क्या कहिए
जो ग़मों को गले लगाते हैं

⊙

फिर पलट कर बहारें आतीं काश।
वादियाँ फिर मुझे बुलातीं काश

मेरे दिल को सकून सा मिलता
कोयलें गीत वो सुनातीं काश

उनकी यादों से ज़ख़्म सिल जाते
रूह की प्यास को बुझातीं काश

ज़िक्र जिन में तेरा हो वो नज़रें
दास्तां ऐसी भी सुनातीं काश

देख कर उनको दिल धडकता है
आरज़ूएं भी गुनगुनातीं काश

सोचता हूँ कि वो हसीन नज़रें
दूर से ही मुझे बुलातीं काश

ए "हताश" इतनी बात तो होती
मस्त आंखें वो मुसकुरातीं काश

⊙

ज़ो लफ़्ज़ भी था उसमें वो इन्तिख़ाब निकला
इक इक सवाल तेरा क्या लाजवाब निकला

जम्हूरियत ने आख़िर यह रंग भी दिखाए
ना अहल था सरासर जो कामयाब निकला

गो उसने हक़ की ख़ातिर यह जान भी गवांदी
इस इम्तिहान में लेकिन वह कामयाब निकला

इक इक कदम पे हम ने तारीफ़ कीथी उसकी
लेकिन यही ज़माना कितना ख़राब निकला

हम जानते हैं इसकी चारागरी है मुश्किल
जोग़म भी उस ने बख़्शा वह लाजवाब निकला

अब ज़िन्दगी में कोई तहरीक भी नहीं है
तसकीन जिसको समझे जी का अज़ाब निकला

वाकिफ़ नहीं था शायद इस से "हताश" नादां
औरों के काम आना वजहे सवाब निकला

क्या मिला है उन्हें अपनाने से
अपने भी हो गए बे गाने से

बात बिगड़ी हुई क्या सुलझेगी
और उलझेगी यह सुलझाने से

है उन्हें शैरो सुख़न का दावा
लोग जो फ़न से हैं अनजाने से

मिटना इश्क़ में है कठिन कितना
पूछना यह किसी परवाने से

बज़्म में पहले थी कहाँ रौनक
यह बहार आई तेरे आने से

मुस्कुरा कर किसी ने जो देखा
शहर में फैले हैं अफ़सने से

क्या जफा होती है क्या तौर "हताश"
हम हैं इन बातों से बेगाने से

⊙

चारों तरफ़ जो आज नज़र आता है धुआँ
इस दिल की कायनात पे छाजाता है धुआँ

मिट जाएं आरज़ूएं इस ने ले लिया लपेट में
देखें जिधर भी ज़ुल्म का लहराता है धुआँ

इन्सान किसी तरह भी गवारा न कर सके
क्या कहिए कैसी आग बरसाता है धुआँ

मिट जाएँ आरज़ूएँ तो बनती हैं हसरतें
बुझ जाए जब भी आग तो बन जाता है धुआँ

यह ज़िन्दगी तो मौत परखती है इनहिसार
पानी पड़े जो इस पे तो मिट जाता है धुआँ

कैसा अजीब शहर है घुटता है दम यहाँ
होते ही शाम चारसू छा जाता है धुआँ

जलती है जब चिता तो यह देखा है ए "हताश"
सारी फ़िज़ा में जज़्ब सा हो जाता है धुआँ

उस की किसी भी बात का कोई नहीं जवाब
आठों पहर छलकता ही रहता है वो शबाब

आज़ाद होके भी है वही अपनी ज़िहनियत
आज़ाद हो न पाए किसी तौर हम जनाब

खाते रहे हैं हर घड़ी दर दर की ठोकरें
सच पूछिए तो अपना मुकद्दर ही है खराब

यह और बात उन पे कुछ होता नहीं असर
पढ़ने को लोग पढ़ते हैं दुनिया की हर किताब

रिशते दिलों के रख दिए हैं ऐसे तौड़ कर
हमको दिए हैं अपनों ने सदमात बे हिसाब

पेहचान ख़त्म हो गई हर एक शख़्स की
हर एक शख़्स आज है पहने हुए नक़ाब

रखते हैं दिल में आरज़ू जन्नत की ए "हताश"
रखते नहीं मगर वह गुनाहों का कुछ हिसाब

⊙

उमड़ उमड़ कर आए बादल
दूर दूर तक छाए बादल

फूलों पर बिखरा कर शबनम
कोमल राग सुनाए बादल

वादी वादी पानी बरसे
जल थल जल थल लाए बादल

वहां वहां बिजली सी चमकी
जहां जहां भी छाए बादल

सूरज से इक आग बरसती
ठण्डक सी पहुंचाए बादल

धरती की कब प्यास बुझेगी
आसमान पर छाए बादल

खेतों खलियानों को अकसर
अपने साथ बहाए बादल

वो सामोश छलकती आँखें
क्या क्या याद दिलाए बादल

अब मिलेगा कहां वह घर अपना
वक़्त हो किसक़द्र बसर अपना

उसका अंदाज़ं गुफ़्तगू है अलग
उसकी बातों का है असर अपना

हो ही जाएंगे सांस सब पूरे
कट ही जाएगा यह सफ़र अपना

रसते बसते घरों को छोड़ आए
है फ़साना यह मुख़्तसर अपना

दर–ब–दर फिर रहे हैं शामोसहर
गावँ अपना न अब नगर अपना

बात पूछें यह किस से जाकर हम
ख़त्म होगा कहां सफ़र अपना

हम तो बस इतना चाहते हैं "हताश"
हो सके जिस से बस गुज़र अपना

⊙

हज़ारों लोग तरसते हैं अपने घर के लिए
नज़र में आस है उजड़ी सी रहगुज़र के लिए

तुम्हें न याद करेंगे यह मानते हैं मगर
कोई तो शुग्ल हो इस उम्रे मुख़्तसर के लिए

भुला सकूंगा न हरगिज़ कभी तेरा एहसान
कि तुमने दाग़ दिए मुझ को उम्र भर के लिए

मिले जो वक़्त तो आना ग़रीब ख़ाने पर
तरस गएं हैं मुहब्बत की इक नज़र के लिए

तुम्हारे साथ ही गुज़रेगी ज़िन्दगी सारी
तुम्हें जो अपना बनाया है उम्र भर के लिए

अगरचि हलक़ए ज़ुलमात में जिए बरसों
दुआएं करते हैं दिन रात अब सहर के लिए

न जाने कौन सी सोचों में गुम हो प्यारे "हताश"
निकलना है अभी कुछ देर में सफ़र के लिए

⊙

ख़ूब है अपनी बज़्म आराई
एक में एक मेरी तनहाई

काश पहचानता कभी उसको
काश मिलती मुझे वह बीनाई

मुझ से हासिल हुआ न कुछ उसको
ज़िन्दगी मुझ से मिलके पछताई

इन्कलाब आता है ज़माने में
वक़्त लेता है जब भी अंगडाई

किसको इनका सुराग़ मिलता है
कौन नापे ग़मों की गहराई

मैं न समझा मगर ज़माने को
बार बार उसने बात समझाई

मैं ने हर बात साफ़ की है "हताश"
इसलिए मैं ने हर सज़ा पाई

⊙

सफ़ीना जिसतरह आबे रवाँ में
मैं तनहा हूँ मुसाइब के जहां में

बहारों की न छेड़ो बात हम से
कि हमने फूल उगाए हैं खिज़ां में

हक़ाइक़ पर है मुब्बनी बात मेरी
मिलावट कुछ नहीं मेरे बयां में

जो सुनता है वही सर को है घुनता
कशिश है किस क़द्र उस दास्तां में

यह दुश्मन को बना लेती है अपना
यह ख़ूबी है फ़कत शीरीं ज़ुबां में

निकल कर आशियाँ से दर ब दर हैं
सकूं कितना था अपने आशियां में

बताए दास्तां बरबादियों की
कहां हिम्मत "हताश" है ख़स्ता जां में

⊙

आज कितने सिमट गए हैं आप
हम से ऐसे जो कट गए हैं आप

याद हैं आप को वो सब वाइदे
अपने वाइदों से हट गए हैं आप

ज़ुल्म, जोरो जफ़ा, रियाकारी
कितने ख़ानों मे बट गए हैं आप

ऐसा पहले कभी नहीं देखा
आज आकर पलट गए हैं आप

जज़्ब होकर मेरी निगाहों में
बात क्या हे जो कट गए हैं आप

लाख टूटी मुसीबतें दिल पे "हताश"
रू बरू सब के डट गए हैं आप

⊙

हादिसों सों को गले लगाना है
ज़ीस्त का हौसला बढ़ाना है

हम तो हर ग़म में मुस्कुराए हैं
हम ने हर ग़म में मुस्कराना हैं

जो मुहब्बत की रोशनी बख़्शे
प्यार का वो दिया जलाना हैं

ख़त्म करनी हैं तलखियां सारी
हम ने माज़ी को भूल जाना हैं

हम ने दुश्मन तो आज़माए हें
दोस्तों को भी आज़माना है

जिसकी छांव सभी के काम आए
एक पेड़ ऐसा भी लगाना है

जब मुसीबत का वक़्त आएगा
हम ने अपने को आज़माना हैं

दिल की तस्कीने जाविदां के लिए
उस की आंखों में डूब जाना है

जो हो सब से ही मुख़्तलिफ़ "हताश"
एक ऐसा ही नगर बसाना है

⊙

जो अमल से यहां ख्याली है
रस्म उस बज़्म की निराली है

उसने उसको डुबो के साहिल पर
आबरू नाव की बचा ली है

आप को ख़ाक रास आएगी
मेरी दुनिया फ़कत ख्याली है

खूब तर है यह आपका अंदाज़
जब मिली है नज़र, चुराली है

सब को पढ़ता है वह निगाहों से
उसकी हर बात ही मिसाली है

तू जहां के लिए तो है फ़याज़
मेरा दामन अगरचि खाली है

मैं नहीं जानता मेरी कशती
किसने गिर्दाब से निकाली है

हिज्र की वादियें में रह कें "हताश"
मैं ने दुनिया नई बसा ली है

⊙

जो ठोकरें खाता है, वो शख़्स संभलता है
हालात को वो अपनी मर्ज़ी से बदलता है

माहौल को करता है ख़ुशबू से मुअत्तर वो
छोटे से गुलशन में भी जोफूल महकता है

दिल तोड़ से देते हैं दो बोल भी नफ़रतके
तू अपनी ज़ुबां से क्यूँ यह ज़हर उगलता है

हर जाहिले मुतलक है छाया हुआ दुनिया पर
जब देखता हूँ मंज़र तो खून उबलता है

हैरां सा होता हूँ रफ़तारे ज़माना पर
हर चीज़ बदलती है, जब वक्त बदलता है

वो ख़ूब समझता है हालात के तेवर को
हालात के सांचे में इन्सान जो ढलता है

मिट जाती है रस्ते में होती है रुकावट जो
तदबीर से जब इन्सान तक़दीर बदलता है

हम लाख करें कोशिश इसको नहीं पासकते
यह वक़्त भी किस दर्जा रफतार से चलता है

तू खैरख्वाहों में हरगिज़ उसे शुमार न कर
किसी तरह भी ज़माने का एतबार न कर

मुझे यकीं न आए तुम्हारे जलवों पर
मेरी नज़र को तू इतना बे करार न कर।।

बना तू अपना ज़माना खुद अपनी हिम्मत से
तू दूसरों पे कभी इतना इनहिसार न कर

किसी बात पे जब मेरा इख्तियार नहीं
जो हो सके तो मेरी खामियां शुमार न कर

यह आसमां भी अपना ज़मीन भी अपनी है
कोई भी हो उसे ग़ैरों में तू शुमार न कर

यह बात राज़ की है फिर भी कह रहा हूँ "हताश"
यह वक़्त वो है कि खुद पर भी एतबार न कर

⊙

रविश कैसी है यह कैसा चलन है
हर इक इन्सान लाश–ए बे कफ़न है

यह दुनिया देखने में इक चमन है
मगर माहौल में कितनी घुटन है

यहां तसकींनो राहत ढूंढ़ते हो
यह दुनिया ख़ारज़ारों का चमन है

हर इक चेहरे पे छाई मुरदनी सी
हर इक चेहरे पे यह कैसी थकन है

यह किसने उस से कह दी बात कोई
परेशां सा वो जाने उंजमन है

न कोई रंग है ख़ुशबू न कोई
यह कैसे फूल हैं कैसा चमन है

"हताश" दिल शगुफ़्ता को हुआ क्या
तपिश आंखों में, सीने मे जलन है

⊙

ग़मे ज़िन्दगी को जाविदां समझो
वरना हर चीज़ राइगां समझो

हर कोई मेहरबान नहीं होता
हर किसी को न मेहरबां समझो

भूल जाते हैं लोग हर एहसान
इस हक़ीक़त को तुम अयां समझो

इक सदा गूंजती है कानों में
मैं वहां हूँ मुझे जहां समझो

हर गुमां कम नहीं हक़ीक़त से
हर हक़ीक़त को तुम गुमां समझो

इसकी हद ही नहीं ज़माने में
ग़म को इक सेले बेकरां समझो

ज़िक्र था उसकी बे वफ़ाई का
बात फैली कहां कहां समझो

ज़िन्दगी को समझना है तो "हताश"
तुम किराए का इक मकां समझो

⊙

चिरागे़ आरज़ू मद्धम नहीं है
कोई भी आस दिल में कम नहीं हैं

असूलों पर हैं कायम आज तक हम
किसी सूरत भी यह सर ख़म नहीं है

ज़माने में है आख़िर कौन ऐसा
जो तेरी ज़ात में मदग़म नहीं हैं

बता तो दूं मैं हर इक ज़ख्म दिल का
मगर हर ज़ख्म का मरहंम नहीं हैं

हैं इसके चारसू कांटे ही कांटे
किसी भी फूल पर शबनम नहीं हें

खुली है जब से दुनिया की हक़ीकत
किसी भी बात का अब ग़म नहीं है

"हताश" इस रंग में कटती है अपनी
किसी भी चीज़ का मातम नहीं हैं

⊙

उन के दीदार को रहे बेताब
उन के जलवे थे किस कद्र कमयाब

दिल भटकता था गम के सहरा में
हम तेरी आरिज़ू में थे ग़र्काब

हर क़दम पर मुसीबतें तौबा
ज़िन्दगी थी कि जान का था अज़ाब

रस्मे मिहरो वफ़ा रवादारी
आज के दौर में हैं यह कमयाब

आप के इक सितम से भी महरूम
हम हैं दरिया में और हैं बे आब

मुस्कुराता हूँ उनकी बातों पर
तन्ज़ करते हैं जब मरे अहबाब

रूबरू उनके चुप रहेंगे "हताश"
उन सवालों का बस यही है जवाब

⊙

हर ज़ुबां अब तो आग उगलती है
ऐसे में बद दुआ निकलती है

आज क्या हो गया बहारों को
सारे गुलशन मे आग जलती है

जब भी शेरो सुखन की मेहफ़िल हो
ज़िहन में इक गज़ल मचलती है

लाज़मी है रसूख हो कोई
वरना क़िसमत कहां चमकती है

सुबह होती है किस वक़ार के साथ
किस सलीके से शाम ढंलती है

ग़म ज़दा हो के उनकी हर आवाज़
मेरे शेरों में आके ढलती है

जब भी आते है बज़्म में वो "हताश"
यह तबीअत ज़रा बहलती है

⊙

हर क़दम पे चोट खाई है
ज़िन्दगी फिर भी मुस्कुराई है

उसके अन्दाज़ आप जैसे थे
चांदनी जब उतर के आई है

कम न था जो किसी भी सहरा से
अब वहां भी बहार आई है

हम ने उस से वफ़ा न की हरगिज़
उस ने तोहमत अजब लगाई है

तजरुबा उसका मुझ से बहंतर था
उसकी हर बात काम आई है

वो जो आए 'ग़रीब ख़ाने पर
जैसे घर में बहार आई है

उस को दिल में बसा लिया है "हताश"
दिल में इक जोत सी जलाई है

⊙

खुल जाएंगे सब राज़ अंजामे सफ़र तक
कुछ दूर चलो साथ मेरी राह गज़र तक

इसपर अभी जुर्रत–ए–परवाज़ है बाक़ी
माना कि जला ड़ाले हैं इसने मरे पर तक

हैरत है सितम गर की नज़र झुकती नहीं है
शरमिन्दा हूं तो लोग उठाते नहीं सर तक

बे खोफ़ नशेमन मेरा अपनों ने जलाया
अफ़सोस कि मुझे को न हुई इसकी ख़बर तक

यह शिद्दते आलम यह मायूसी का आलम
हर चीज़ सिमट आई है क्यों मेरे ही घर तक

सच बोलने से जो कभी कतराते नहीं हैं
उन लोगों के दिल मे नहीं होता कोई ड़र तक

दुनिया से "हताश" उठ भी गए हम जो किसी रोज़
पहुंचेगी किसी को न मगर इसकी खबर तक

⊙

ज़िदगी में कई अलम देखे
रंज देखे हज़ार ग़म देखे

तुम तो खुशियों की बात करते हो
हम ने इक इक क़दम पे ग़म देखे

दूसरों पर जो जान देते हैं
ऐसे अहबाब हमने कम देखे

नज़्म–ए दुनिया बदल के रखदें जो
हमने वो साहिब कलम देखे

मुस्कुराते थे गो बज़ाहिर वो
लोग अन्दर से दीदा नम देखे

पत्थरों का मिज़ाज था जिनका
उम्र भर हमने वो सनम देखे

ए "हताश" इतने हो परेशां क्यों
क्या कहीं कोई ताज़ा ग़मदेखें

⊙

लोग गुम हो गए फ़ज़ाओं में
ज़िन्दगी खो गई ख़लाओं में

गुलिस्तां में रवां हैं बादे नसीम
अब कशिशं कहां अदाओं में

अब मय्यसर कहां हसीन चिनार
लेट जाता था जिनकी छावों में

शहर में हूं सकून से महरूम
मुतमईं किसक़द्र था गावों में

किस का हुसनो जमाल है शामिल
ज़िन्दगी की हसीं अदाओं में

हाय क्या दिल फ़रेब मन्ज़र थे
खो गए वो कहां खलाओं में

ए "हमाश" उसकी प्यारी आँखों ने
बेड़ियां डाल दी हैं पाँवों में

⊙

हम तो बे घर हैं कोई ठिकाना नहीं
इसलिए साथ अपने ज़माना नहीं

उसकी चश्मे–करम हम पे हो किसलिए
यह कलमा अपना तो आरिफ़ाना नहीं

आप बेशक गज़ल इस को कहिए मगर
दिल की फ़रयाद है यह तराना नहीं

जिस गुलिस्तां को हम छोड़ कर आए
अब वहां अपना कोई ठिकाना नहीं

मेरे दोस्त उसको मुन्सिफ़ कहें किसतरह
बात उसकी कोई मुन्सिफाना नहीं

आपने मुस्कुरा कर जो इक बात की
मेरे दिल की खुशी का ठिकाना नहीं

तज़किरा जिसमें शामिल न हो आपका
ए "हताश" ऐसा कोई फ़साना नहीं

काश मेरा भी कोई घर होता
यूं भटकता न दरबदर होता

जो मिला ख़ुद से बे ख़बर था वो
कोई तो ख़ुद से बाख़बर होता

हौसले दिल के और बढ़जाते
रास्ता और पुर ख़तर होता

आप जो माइले करम होते
ज़िक्र उसका नगर नगर होता

सब की आँखों में आगए आंसूँ
उसके दिल पर भी कुछ असर होता

उसके सीने में दिल नहीं शायद
उस पे बातों का क्या असर होता

वह जो रहता है दूर दूर "हताश"
काश वो मेरा हमसफ़र होता

◉

लम्हा लम्हा नफ़स नफ़स पे भारी है
दिल में कैसी यह बे क़रारी है

हर तरफ है ग़मों का गर्दो गुबार
हर तरफ़ एक ख़ौफ़ तारी है

हमको समझे न आप ख़ाना बदोश
ग़मे दुनिया से अपनी यारी है

रास आती नहीं यह हर इक को
ज़िन्दगी वरना सब को प्यारी है

है जुदा सब से उसका हर अंदाज़
उसकी हर बात सब से न्यारी है

मौत से बस रही है यह खाइफ़
ज़िन्दगी वरना किस से हारी है

क्या डराएंगे हादिसे हम को
हमने ज़ुल्फ़े–जहां संवारी है

सब को अपना समझ रहे हैं "हताश"
ख़ूब यह रस्मे दुनिया दारी है

⊙

अदा से मुस्कुराए क्या करोगे
वो ऐसे पेश आए क्या करोगे

तुम्हारे दिल में जो रच बस गया है
जो तुम से रूठ जाए क्या करोगे

मय व सागर से तौबा ख़ूब लेकिन
जो बादल घिर के आए क्या करोगे

मुहब्बत के जहां में कोई राहरव
जो रस्ता भूल जाए क्या करोगे

भुला डालोगे उसको दिल से लेकिन
वो फिर भी याद आए क्या करोगे

समझ बैठे हो जिसको ग़ैर यक्सर
तुम्हें अपना बनाए क्या करोगे

"हताश" नीमजां से पूछना यह
अगर वह याद आए क्या करोगे

⊙

जो हुआ अब उस पै पछताओ नहीं
मसाइल से इतना घबराओ नहीं

नफ़रतों की आग को ठण्डा करो
इस को हरगिज़ और भड़काओ नहीं

मुश्किलों में काम आएंगे यही
दोस्तों को ऐसे ठुकराओ नहीं

बे तक्कलुफ़ सी हो कोई गुफ़्तगू
आज हमसे इतना शर्माओं नहीं

यह छलक जाए न अश्कों की तरह
दिल को इस दर्जा भी याद आओ नहीं

खुद बिखर जाओगे तुम भी ए "हताश"
दिल को तुम ऐसे बिखराओ नहीं

⊙

तुझको तेरा अमल सिला देगा
बे सबब कोई तुझको क्या देगा

इस ज़माने पे एतबार न कर
यह ज़माना तुझे दग़ा देगा

याद रखना जो तेरा दुश्मन है
वक़्त पर हर खुशी लुटा देगा

दिल यह करता नहीं क़बूल कभी
वो वफ़ा के इवज़ वफ़ा देगा

बात करता है फिर ख़लूस से जो
वो मुसीबत में फिर फंसा देगा

जिसको अपना लहू दिया है "हताश"
नहीं मालूम क्या सिला देगा

⊙

हर ख़ुशी छीन ली ज़माने ने
यह नवाज़िश भी की ज़माने ने

वक़्त का हर चलन बदल ड़ाला
कैसी करवट यह . ली ज़माने ने

र्ददो–ग़म से उसे नवाज़ा है
हर कसक दिल को दी ज़माने ने

मुझ को रुसवा किया जहां भर में
यूं उड़ाई हंसी ज़माने ने

इसका मफ़हूम था अलग सब से
बात मुझ से जो की ज़माने ने

दिल को हासिल नहीं क़रार कहीं
क्या यह सोग़ात दी ज़माने ने

मेरा नामो निशां मिटा ड़ाला
खूब यह क़द्र की ज़माने ने

कैसे कहते "हताश" हाले दिल
जब ज़ुबां खींच ली ज़माने ने

⊙

गर्दिशे शामो–सहर से आशना
हम तो हैं हर इक बशर से आशना

जानते थे उसका हर नक्शे क़दम
हम थे उसकी रह गुज़र से आशना

जिस सफ़र पर वो रवाना होगया
कौन हैं अब उस सफ़र से आशना

रात से अब इस क़द्र मानूस हूँ
अब नहीं हूँ मैं सहर से आशना

अपने बारे मे नहीं मालूम कुछ
आदमी है बहरो बर से आशना

वो समझते हैं हर इक अंदाज़ को
ल़ोग हैं जो उस नज़र से आशना

हम नहीं खाइफ़ सफ़र से ए "हताश"
हम हैं आफ़ाते सफ़र से आशना

⊙

हम से नज़रें मिला के बात करो
इक ज़रा मुस्कुरा के बात करो

सर झुकाने से कुछ नहीं होगा
हर जगह सर उठाके बात करो

पेश आते हो तुम तकल्लुफ़ से
सारे परदे उठा के बात करो

फिर फ़ज़ा में बिखेर दो मस्ती
फिर ज़रा लड़खड़ा के बात करो

बात करने का कुछ मज़ा आए
कोई मेहफ़िल सजा के बात करो

तुम को रस्ता दिखाएगा ज़मीर
इस दिये को जला के बात करो

ऐसे जानो न गैर हमको "हताश"
यूं न नज़रें चुरा के बात करो

⊙

ज़िन्दगी इक अजब कहानी हे
जाविदां हो के भी यह फ़ानी है

क्या भरोसा करे कोई उस पर
चन्द रोज़ा यह ज़िन्दगानी है

उसी की ज़ात मोअतबर है यहां
उसकी ही ज़ाते ग़ैर फ़ानी है

किसको हासिल हुआ सबात यहां
जो भी शै है जहां में फ़ानी है

उसकी जो बात भी है जादू असर
उसकी हर बात में रवानी है

दिल के खंड़रात हैं अज़ीज़ मुझे
यह भी इक दौर की निशानी है

उसका हर एक क़ौल मुस्ततनद है "हताश"
मेरी हर बात आनी जानी है

◎

यह लाज़िम है, रहें हम इनकिसारी से ज़माने में
कभी मिलता नहीं कुछ भी किसी का दिल दुखाने में

तुम्हारे तज़करे से बढगई है उसकी अहमियत
मेरा भी ज़िक्र शामिल है मुहब्बत के फ़साने में

यह कैसा शौक़ है उनका,यह कैसा है ज़ोक़ है उनका
उन्हें क्या लुत्फ़ आता है मरे दिल को दुखाने में

यह माना दिल से दिल मिलने में हैं कुछ और ही आलम
मज़ा कुछ और ही है आप से आंखें मिलाने में

यह कोशिश कर, कि दुनिया में तुझे ख़ुशियाँ मय्यसर हो
न अपना वक़्त ज़ाया कर फ़क़त आंसू बहाने में

यहां हर इक को दावा है कितुझ से भी है बढ़कर
मगर यह दखेना है कौऩ है तूझ सा ज़माने में

"हताश" खस्ता जां तो मुन्तज़िर है कब अजल आए
कहां लगती है इतनी देर लेकिन उसके आने में

◉

ढ़लती शाम का साया मैं
रात पड़े घबराया मैं

सारी रात गिने तारे
सुबह हुई घर आया मैं

उपर आग बरसती हैं
नीचें ठण्ड़ा साया मैं

पानी पानी था मौसम
भीगा भीगा आया मैं

टहनी टहनी फूल खिले
खुशबू लेकर आया मैं

कौन यह मुझको तकता हें
किसके मन को भाया मैं

सात समन्दर पार किए
तुझ से मिलने आया मैं

मेरी भी औकात है क्या
अपने जिस्म का साया मैं

उस पर चलना मुश्किल है
जिस रसते से आया मैं

तुम ही हो वो शख़्स "हताश"
जिससे मिलने आया मैं

हमसफ़र बनकर मेरा चलता हैं ग़म
आरिज़ू की गोद में पलता हैं ग़म

उसकी मस्ती से है वो दिल हम किनार
जिस किसी के दिल में भी पलता हैं ग़म

दिल की गहराई में जब पलता है ग़म
ज़िन्दगी भर फूलता फलता हैं ग़म

हर कोई करता है क्यों इस से गुरेज़
दिल में अक्सर सोच कर जलता है ग़म

एक दिल में राहतें ही राहतें
एक दिल में हर घड़ी पलता है ग़म

दिल के पैमाने का आलम क्या कहें
दिल के पैमाने में जब ढलता है ग़म

क्या अजब है ज़िन्दगी की रीत भी
दिल शिकस्ता है जहां पलता है ग़म

अपनी हद से जब गुज़रता है "हताश"
इक नये सांचे में फिर ढ़लता है ग़म

⊙

आदमी को मुस्कुराना चाहिए
ऐसे अपना ग़म भुलाना चाहिए

गुलिस्तां में आप भी मौजूद हूँ
और कुछ मौसम सुहाना चाहिए

आदमी क्या काम कर सकता नहीं
साज़गार वैसा ज़माना चाहिए

ग़ैर हो, अपना हो क्या इसका सवाल
हम को गिरतें को उठाना चाहिए

ग़ैर वाजिब जो भी हो उससे हमें
अपने दामन को बचाना चाहिए

वो गुलिस्तां हो कि सहरा हो मगर
सर छुपाने को ठिकाना चाहिए

अंजुमन से उठके जाने के लिए
आपको कोई बहाना चाहिए

साफ़ गोई तेरी फ़ितरत हैं "हताश"
दिल तेरा ग़म का निशाना चाहिए

⊙

वक़्त हाथों में लिये चलते रहे
लोग ऐसे ही जिये चलते रहे

सारे लगते हैं यहां बदमस्त से
लड़खड़ाते बिन पिये चलते रहे

ख़ुद पे वो सहते रहे ज़ोरो सितम
चाक दामन के सिये चलते रहे

हमने माँगी थीं दुआएँ आपकी
सौ जतन ऐसे किए चलते रहे

घोर अन्धेरों का सफ़र दरपेश था
बुझ गये सारे दिये चलते रहे

हम हैं भूले जो किया एहसां "हताश"
वो मगर ताने दिये चलते रहे

⊙

फ़र्क किस दर्जा हको–बातिल में था
किस को अपनाऊ मैं इस मुश्किल में था

बसती बसती ढूंढ़ता था मैं उसे
और वो काफ़िर तो मेरे दिल में था

रोकतीं क्या रास्ते की अड़चनें
जो क़दम भी था मेरा मन्ज़िल में था

वो मुझे पेहचान लेगा देखकर
एक अंदेशा दिले–ग़ाफ़िल में था

मंज़िले मक़सूद उसके पास थी
जज़्बए ईस़ार जिसके दिल में था

गो समन्दर में थी गहरी ख़ामशी
तज़े तर तूफ़ान इक साहिल में था

वो नज़र थी यां कि कोई कहकशां
एक लुतफ़े ख़ास इस झिलमिल में था

जिसके बाइस खा गया मैं मात ख़ुद
इक़ ग़रूर ऐसा भी मेरे दिल में था

मुअर्रिका आराई क्या करता "हताश"
वो तो बेहिस लोगों की महफ़िल में था

फिर मैं तेरी अंजुमन में आया हूँ
साथ अपने आरज़ूएं लाया हूँ

मेरी सूरत देखना मुमकिन नहीं
हर क़दम पर आप अपना साया हूँ

अब न छेडो बात माज़ी की कोई
यह जज़ीरां छोड़ कर मैं आया हूँ

इस ज़माने में नहीं इनका रिवाज
मैं वफाओं पर बहुत शर्माया हूँ

किस लिए मैं ने तुझे अपना कहा
बारहा इस बात पर पछताया हूँ

देख मेरे दिल में हैं कितना ख़लूस
देख कितने शौक़ से मैं आया हूँ

तय किया कितना सफ़र लेकिन "हताश"
फिर भी अपने घर ही वापस आया हूँ

⊙

ख़ूब है यह ख़ुशबयानी आपकी
कितनी अच्छी हैं कहानी आपकी

पुर कशिश है किसक़द्र इक इक अदा
कितनी प्यारी है जवानी आपकी

आप हैं तक़रीर में जादू बयां
तेज़ हैं कितनी रवानी आपकी

रात दिन है अपने लब पर यह दुआ
हर अदा हो जाविदानी आप की

हो गई है आज हर इक बात सच
जो भी सुनते थे ज़ुबानी आपकी

आपने बख़्शा है जो दाग़े वफ़ा
किसक़द्र है मिहरबानी आपकी

हाय यह मुबहम इशारें आपके
हाय यह जादू बयानी आपकी

क्यों न हो मेरा तखय्युल अर्श पर
मुझ पे है जब मिहरबानी आपकी

आपने समझा अगर शायर मुझे
यह भी होगी कद्रदानी आपकी

किस क़द्र शोहरत मय्यसर है मुझे
यह है सारी मिहरबानी आपकी

जो भी गाएगा गज़ल मेरी मेरी "हताश"
वो सुनाएगा कहानी आपकी

⊙

दुनिया में बेमिसाल था वो लाजवाब था
आख़िर मेरी निगाह का वो इन्तिख़ाब था

उस का ख्याल आया तो आँखें छलक पड़ीं
क्या कीजिए कि दिल में ग़म बेहिसाब था

जब से तेरी निगाहें करम इसको छू गई
तब से हर एक ज़र्रा यहां आफ़ताब था

महरूमियों के साए में यूं उम्र कट गई
जैसे किसी गरीब का दौरे शबाब था

उसकी समझ में आ न सकीं इसकी अज़मतें
उसके लिए यह ज़िन्दगी शायद अंज़ाब था

अपना लिए हैं हमने जहां के तमाम ग़म
इस इक ज़रा सी बात में कितना सवाब था

जिस में था ए "हताश" ख़लूसो वफ़ा का ज़िक्र
शायद किताबे ज़ीस्त में ऐसा भी बाब था

⊙

कहूँ तो किस से कहूँ किसक़द्र उदास हूँ मैं
कि इक हसीन सी तसवीरे रंगे यास हूँ मैं

गुज़र रहे हैं अभी लोग जिन मराहल से
तमाम ऐसे मराहल से रोशनास हूँ मैं

न इन पे छत है कहीं खिड़कियां न दरवाज़े
शिकस्ता झोंपड़ो के कितना आस–पास हूँ मैं

यह दौरेनव है सब हसरत से देखते हैं मुझे
पुराने दौर का शायद कोई लिबास हूँ मैं

मेरी ज़बां पे लगाई हैं बन्दिशें उसने
मेरा यह जुर्म है शायद कि हक़ शनास हूँ मैं

जो न में रहूंगा तो तेरा वजूद क्या होगा
मुझे न फैंकना हरगिज़ तेरा लिबास हूँ मैं

बुझा सकेंगा मेरी तिशनगी को कौन "हताश"
जन्म–जन्म से लगी है जो ऐसी प्यास हूँ मैं

बार बार आता है अब घर का खयाल
पुर कशिश से उन मनाज़िर का खयाल

घर से गो निकले हुए मुद्दत हुई
इस पे भी जाता नहीं घर का खयाल

मुफ़लिसी इतनी है बस अब क्या कहें
ख़ाक आएगा हमें ज़र का खयाल

सजदा करने को जबीं ख़ुद झुक गया
जब कभी आया है उस दर का खयाल

ड़ालता हूँ जब नज़र ऐमाल पर
दिल को तड़पाता है महशर का खयाल

बे क़रारी दिल की बढ़ती जाए गी
तुझ को ले डूबेगा यह ज़र का खयाल

बन गया है जो तेरा ईमां यहां
दिल में है उस एक काफ़र का खयाल

अब कटेगी उजड़ी बसती में "हताश"
अब तो यह है ज़िन्दगी भर का खयाल

⊙

है मुझे से ज़िन्दगी बरहम ज़रा ठहर जाओ
बड़ा अजीब है आलम ज़रा ठहर जाओ

न जाने दिल को यह क्या क्या पयाम देती है
तुम्हारी याद की सरगम ज़रा ठहर जाओ

यह चहाता हूँ मैं हर बात साफ हो जाए
हर एक बात है मुबहम ज़रा ठहर जाओ

बदलने वाला है माहौल फिर चले जाना
कि घुट रहा है अभी दम ज़रा ठहर जोआ

फिर इस के बाद न देखोगे तुम मेरी सूरत
यह ज़िन्दगी है कोई दम ज़रा ठहर जाओ

अभी तो खाई नहीं है मेरी अन्ना ने शिकस्त
अभी हुआ नहीं है सर ख़म ज़रा ठहर जाओ

मुझे न आई सियासत कभी भी रास "हताश"
अदब रहा मेरा परचम ज़रा ठहर जाओ

⊙

गो अपने आप से वो बहरा वर था
ज़माने से सरासर बे ख़बर था

थी उसकी हर इक बात बारे ख़ातिर
मुझे तसलीम वो अहले हुनर था

नज़र ख़ामोश और हौंठों पे चुप थी
फ़साना ज़िन्दगी का मुख़्तसर था

उसे बेशक ज़माने की खब़र थी
मगर वो खुद से कितना बे खबर था

मुय्यसर आज तक है ठोकरें ही
यह याद आया वो मेरा हम सफ़र था

सहर ता शाम हंगामे थे कितने
मगर वो दौर कितना मुख़्तसर था

कोई महलों में था महफ़िल सजाए
मगर गलियों में कोई दर ब दर था

किसी ने लूट ली है दिल की दुनिया
किसी के सहर का दिल पुर असर था

कभी चूमूगा ख़ाक अपने वतन की
मैं ज़िन्दा सिर्फ इतनी आस पर था

मगन था वो "हताश" अपनी धुन घुन् में
कहा मैं ने जो कुछ वो बे असर था

⊙

हर इक लब पे दहशत की ही बात थी
वो कितनी भयानक सी इक रात थी

तरस्ते थे इक बूंद पानी को हम
ख़ुदा जाने कैसी वो बरसात थी

हर इक शख्स ने खैर मकदम किया
तेरी बात आख़िर तेरी बात थी

तेरी हर नज़र में करिश्मे कई
तेरी हर नज़र में करामात थी

मेरी ज़िन्दगी में जो दाख़िल हुई
हज़ारों मसाइब की बारात थी

कभी आप भी मेरे अपनों में थे
कभी आप से भी मुलाक़ात थी

मुलाक़ात होती रही है मगर
बड़ी मुख्तसर सी वो मुलाक़ात थी

वो जिस पर जफ़ाओं का इल्ज़ाम था
जो सोचा तो वो आप की ज़ात थी

जो मुझे पे किया रहम उसने "हताश"
हकीकत जो पूछो तो ख़ैरात थी

⊙

हक़ाइक़ से वो किसक़द्र दूर है
क़िसी बात पर भी जो म़ग़रूर है

परेशां होता रहे हर कोई
ज़माने का शायद यह दस्तूर है

नहीं जिसको दुनिया की कोई ख़बर
वो अपने ख़्यालों में मसरूर है

है चोराहे पर लाश जिसकी पड़ी
वो मेरी तरह कोई मज़दूर है

इसी ने दिया है उसे इक शऊर
वो हर हाल में ग़म का मशकूर है

अगर तेरे जलवों का परतवै पड़े
नज़र तो नज़र दिल भी मसरूर है

न हक़ बात लाए ज़ुबा पर कोई
तरे शहर का भी यह दस्तूर है

जो हाथ अपना फैलाया उसने "हताश"
वो मेरी तरह कोई मजबूर है

⊙

क्या कहें क्या हैं यह ज़िन्दगी दोस्तो
इस मे अकसर है कोई कमी दोस्तो

मिट़ गए दूसरों के लिए जो यहां
हैं ज़माने में ज़िन्दा वही दोस्तो

मैं समझता हूँ दुनिया के अत़वार सब
मुझको हासिल है यह आगही दोस्तो

मुझको घरै रहीं सैंकडों आफतें
फि़र भी जीने की चाहत रही दोस्तो

याद थी मुझको भी ग़म की इक दास्तां
वो ज़ुबां तक न लाई गई दोस्तो

ज़िन्दगी पर भी कोई भरोसा नहीं
क्यां करें बात हम आप की दोस्तो

तुम ने क्या क्या सितम मुझ पे किए
याद हैं दासतानें कई दोस्तो

मेरे अशआर में देख लेना "हताश"
जब हो महसूस मेरी कमी दोस्तो

⊙

खिसक गई हैं ज़मीं अब तो आस्मां देदो
मैं अपने सर को छुपाऊँ कोई मकां देदो।

मैं अजनबी हूँ यहां किस से दिल की बात कहों
तुम अहले गुलिस्तां हो मुझको आशयां देदो

झुलस्ती आग में जज़बात किस तरह हूँ बयां
जहां सकून से कुछ लिख सकूं मकां देदो

मुझे नसीब था जो मेरी ज़िन्दगी में कमी
मेरी हक़ीर गुज़ारिश हैं वो समां देदो

यही है आरिज़ू मेरी, यही तमन्ना है
जो हक़ की बात कहे हां वहीं ज़ुबां देदो

अता किया है जो फ़न यह भी है करम लेकिन
करे जो दिल पे असर वो मुझे बयां देदो

समझ सके जो मेरे फ़न को शेरों को
जहाने शेरों सुख़न में वो मिहरबां देदो

निकल के आया है दहशत की वादियों से "हताश"
जहां सकून मिले इसको वो जहां देदो

ज़िन्दगी कितनी बे वफ़ा निकली
आशना थी ना आशना निकली

मैं ने अकसर गले लगाया इसे
क्या करूं ज़िन्दगी ख़फा निकली

डूबने वाला यूंही डूब गया
उसके मुंह से ना कुछ सदा निकली

हमने दुनिया को बावफ़ा समझा
यह मगर कितनी बे वफ़ा निकली

इस की हर बात में था गम का कर्ब
आरज़ू गम में मुबतला निकली

जिस नज़र के थे मुख्तलिफ अन्दाज़
वो मेरे गम का आसरा निकली

तुम सितमगर हो ख़ुश रहो फिर भी
अपने मुंह से यही दुआ निकली

क्या करें ज़िक्र उसका प्यारे "हताश"
उसकी हर बात बे मज़ा निकली

⊙

मेरी बाहों में झूम जाए कोई
काश ! मेरे क़रीब आए कोई

इस तरह रूह में समाए कोई
रूह की तिशनगी मिटाए कोई

मैं भटकता हूँ कब से राहों में
मेरी मंज़िल मुझे दिखाए कोई

उस के आगे ज़ुबां नहीं खुलती
किस तरह हाले दिल सुनाए कोई

मैं तो इस बात को तरसता हूँ
काश! अपना मुझे बानाए कोई

कौन समझेगा ऐसी बातों को
दर्द अपना किसे बताए कोई

सैंकड़ों ग़म हैं इसको घेरे हुए
बोझ दिल का ज़रा घटाए कोई

मुझको है भूलना बहुत आसां
मेरी यादों को भूल जाए कोई

सब से मुश्किल तो फ़न यही है "हताश"
ज़िन्दा रहने का फ़न सिखाए कोई

तड़पता है यह दिल जब दोस्तों की याद आती है
करूँ क्योंकर बयान यह किस तरह मुझको सताती है

वफ़ा के रास्ते पर आप थे जब हमसफ़र मेरे
ज़रा सी बात है दिल को मगर कितना रुलाती है

तेरी सूरत अभरती है जो माज़ी के झरोखों से
निगाहि शौक़ को अकसर कई मंज़र दिखाती है

तेरी इक मुस्कुराहट जैसे शालीमार का मौसम
मैं जितना भूलना चाहूँ यह उतना याद आती है

सहर से शाम तक मसरूफ़ थे हम शैरों में
पुरानी बात है फिर भी यह अकसर याद आती है

मैं कितना दूर हूँ अपने वतन से सोचताहूँ जब
वतन की याद अकसर मेरे दिल को गुदगुदाती है

"हताश" दिल शिकस्ता इक कसक उससे बिछड़ने की
मरे अशआर के सांचे में अकसर ढलती जाती है

⊙

कौन समझेगा मोहब्बत की ज़ुबां
हर तरफ नफ़रत सी फैली है यहां

गुम हुए हैं बस्तियों वाले कहां
ख़ाली खाली से पड़े हैं सब मकां

उसकी आंखों में था इक कर्बनिहां
जैसे सर से उठ गया था आसमां

गुम हुए सहराओं में सारे निशां
रेत में ढूंढूं उन्हें लेकिन कहां

खो गए किस धुन्ध में वो लोग भी
जो थे इख़्लासो वफ़ा के पासबां

चार सू फैले हुए हैं चापलूस
और चुप है अहले ग़ैरत की ज़ुबां

रोक लो उनको ग़लत चलते हैं जो
झूठ पर काइम हैं उन सब के बयां

जिन से हंगामा बपा होता था रोज़
ऐसी बातें भी थीं अपने दर्मियां

हम भी किस आलम में थे खोए हुए
जब चला हम से बिछड़ कर कारवां

रात दिन जो खाए जाता है तुम्हें
ग़म सागम है वो दिल में बेकरां

किसक़द्र टूटे हुए हैं वो लोग
उनके चेहरे से यह होता है अयां

जिनको मैं अपना समझता था "हताश"
आज मुझ से दूर हैं वो मिहरबां

⊙

उसके बारे ग़लत निकला क़यास
वह तो अंदर से था किस दर्जा उदास

हक की कोई बात कर सकता नहीं
छा गया है इस क़द्र ख़ोफ़ोहिरास

क्या सितम है उसने ही धोखा दिया
जिस से वाबस्ता रही हरएक आस

अपने दिलका हाल कहने के लिए
आदमी जाए तो जाए किसके पास

हम ने कोशिश की कि इस से निभसके
ज़िन्दगी आई न लेकिन हमको रास

दूर है इन्सानियत से किसक़द्र
आज का इन्सान है कितना बद हवास

इन दिनों किस के तस्सुवर में हैं गुम
क्या सबब है आप रहते हैं उदास

शहर से उक्ता चुका हूँ ए "हताश"
चाहता हूँ अब किसी जंगल में वास

⊙

तफ़सीर क्या हो मेरी इक इन्तिशार हूँ मैं
वीरां रास्ते का गर्दो गुबार हूँ मैं

तुझ पर न हर्फ आए यह सोचता हूँ अकसर
ख़ुद अपने हाले खस्ता पर शर्मसार हूँ मैं

जिन वादियों से बिछड़े मुद्दत गुज़र गई है
उन वादियों की ख़ातिर फिर बेक़रार हूँ मैं

इक दूसरे की ख़ातिर पैहम तडप है दिल में
कुछ बेकरार हो तुम कुछ बे करार हूँ मैं

सरहदे–मुस्सरत से दूर आगया हूँ
दिन रात रंजोग़म से अब हमकिनार हूँ मैं

जिस में न कहकहे हैं जिसमें न कोई नगमा
खामोश वादियों में वो आबशार हूँ मैं

दो रोज़ा ज़िन्दगी में यह बात कम नहीं है
मुफलिस हूँ लाख फिर भी बा एतबार हूँ मैं

मजबूरियाँ बताओं आखिर "हताश" किसको
फरसूदा से रिवाजों से हमकिनार हूँ मैं

हम शिद्धतेग़म से अगर टकराए तो क्या होगा
ज़र्रा भी कभी सूरज बन जाए तो क्या होगा

हर एक सितम हम पर वो ढ़ाए तो क्या होगा
हम को न मुहब्बत ही रास आए तो क्या होगा

पलकों पे जो आंसूं हैं वुक़अत नहीं गो इन की
शब्नम ही कभी दरया बनजाए तो क्या होगा

तरमीम करेगा वो कुछ अपने रवैये में
इस पर भी सितम कोई अगर ढाए तो क्या होगा

यह मान लिया मुंह से कुछ भी न कहे लेकिन
नज़रों से कोई मुझ को समझाए तो क्या होगा

गो शमआ मुहब्बत को बुझने तो नहीं देंगे
तनहाई से हम भी अगर घबराए तो क्या होगा

हम से यह मुहब्बत की तौहीन नहीं होगी
वो अपनी जफाओं पर शर्माए तो क्या होगा

मायूस न हो हरगिज़ फ़रदा से "हताश" अब
रंगीन मनाज़िर वो लूट आए तो क्या होगा

⊙

जो भी ज़हराब से लबरेज़ हो वो जाम बुरा
हर बुरे काम का दुनिया में है अंजाम बुरा

ऐब जूई की न हरगिज़ कभी आदत ड़ालो
इस से बढ़कर नहीं दुनिया में कोई काम बुरा

इस ज़माने के हैं कुछ तौर तरीक़े ही अलग
इस ज़माने में है बद से कहीं बदनाम बुरा

असकी आंखों के हसीं जाम बुहत ख़ूब सही
करदे जो होश से बेगाना वो है जाम बुरा

आज दुनिया में मययसर है उसी को इज़्ज़त
आज दुनिया में जो करता है कोई काम बुरा

ऐसा लगता है कि यह क़ौल गलत ही होगा
हम जो सुनते थे बुराई का है अंजाम बुरा

किस लिए आज मरे नाम से नफ़रत "हताश"
इस से पहले तो न लगता था मेरा नाम बुरा

ग़म कैसे सताता है यहां कौन सुने
दिल टूट सा जाता है यहां कौन सुने

जो शख़्स है दुनिया के मज़ालिम का शिकार
वो क्या कहे जाता है यहां कौन सुने

फ़ुर्सत है किसे किस लिए तू दुनिया को
अफ़साने सुनाता है यहां कौन सुने

ऐसा भी हुआ है कि ग़मे माज़ी में
दिल डूब सा जाता है यहां कौन सुने

अफ़साना सुना जो हो मुस्सरत से भरा
यह ग़म किसे भाता है यहां कौन सुने

मुजरिम हूँ कि जो सच है वो कह देता हूँ
सच अब किसे भाता है यहां कौन सुने

लाज़िम है कि कुछ इन पे अमल भी हो "हताश"
तू बातें सुनाता है यहां कौन सुने

इक सकूते मर्ग छाया चारसू
ऐसा मन्ज़र कौन लाया चारसू

ज़िन्दगी यकसर तड़प कर रह़ गई
मौत ने वो क़हर ढ़ाया चारसू

सख्त हैरत है कि आज इन्सान ने
ख़ून इन्सां का बहाया चारसू

मुझ को अब अपना बनाने के लिए
हाथ यह किसने बढ़ाया चारसू

किस के आने से बहारें आ गई
मुस्कुराता कौन आया चारसू

टूट कर बरसे न जाने कब वो
ज़ुल्म का बादल है छाया चार सू

चीख उठी इन्सानियत प्यारे "हताश"
किस ने ऐसा महशर ढ़ाया चारसू

◉

जो नज़र आता था उस से मुख़्तलिफ़ पाया उसे
ज़िन्दगी भर मैं ने हर इक रंग में परखा उसे

काश वो मेरी तरफ़ करता मुहब्बत की नज़र
मैं ने जानो-दिल से सारी ज़िन्दगी चाहा उसे

जानता था मैं कि आपस में है कितना इख़्तिलाफ़
क्या नहीं है याद इतना भी कहां देखा उसे

उस की सूरत घूमती रहती है नज़रों में सदा
इसी लिए दिल मे हमेशा बन्द रखा उसे

वो-कि ऐसी दास्तां सुनने का कुछ आदी न था
हाल ख़स्ता दिल का आख़िर क्या सुना पाता उसे

उसको फुरसत ही कहां थी बात मेरी सुन सके
जब यह आलम था तो इस आलम में क्या कहता उसे

मुझको यह मालूम था गुज़रेगी उसको नागवार
बात थी जो दिल में किस तरह कहता उसे

ए "हताश" इस दहर में जो शख़्स भी था बाज़मीर
मैं ने इक इक गाम पर अकसर किया सजदा उसे

⊙

ज़िन्दगी नफ़रत से क्या बन पाएगी
रेत की दीवार है गिर जाएगी

क्या ज़रूरी है मिलें रंगीन महल
झोंपड़ों में भी गुज़र हो जाएगी

क्या रहेगी ज़िन्दगी फिर पुर वक़ार
दामने–उम्मीद जब फैलाएगी

आपको शायद नहीं यह तजरुबा
तलख़ बातों से ज़ुबां ज़ल जाएगी

जिस जगह हूँगे तरे नक़्शे–क़दम
उस जगह बज़्मे हसीं सज जाएगी

तुम जो अफ़सुरदा रहोगे ए "हताश"
हर तरफ़ पिज़मुर्दगी छा जाएगी

⊙

जब ख़ुद में झांकता हूँ
ज़ुलमत को हांकता हूँ

मैं राहे जस्तजू में
सड़कों को नापता हूँ

गर्दिश ही है जो ऐसी
मैं जिस से कांपता हूँ

दुनिया के शोरोशर से
मैं दूर भागता हूँ

मन्ज़िल है दूर लेकिन
क़दमों को आंकता हूँ

जो दर्द बन के छाए
वो राग अलापता हूँ

दुश्मन हैं जान के वो
मैं जिनको जानता हूँ

क्यूं कर "हताश" अकसर
रातों को जागता हूँ

तेरी राहों में कलियां बिछाता रहा
ज़िन्दगी को अकसर सजाता रहा

ग़म उठाता रहा, मुस्कुराता रहा
सेंकड़ों ज़ख्मे दिल में छुपाता रहा

मेरी बरबादियों का सबब जो बने
अपने सीने से उनको लगाता रहा

काश कहता वो हर बात को रूबरू
अपने दिल में जो बरसों छुपाता रहा

इस से बढ़कर वफ़ा का हो मेंयार क्या
मैं तेरा हर सितम भूल जाता रहा

उसके चेहरे से ज़ाहिर था हर राज़े दिल
दिल का हर राज़ गो वो छुपाता रहा

उसके दिल में यह कितना अजब शौक़ था
साहिलों पर वो तूफ़ा उठाता रहा

ए "हताश" उसकी फ़ितरत को हम क्या कहें
अपनी ही ज़ात से ख़ोफ़ खाता रहा

⊙

जो मुमकिन हो तुम से मेरे ग़मगुसारो
मुहब्बत से इस ज़िन्दगी को संवारो

नहीं कोई अदना, नहीं कोई आला
सभी हैं बराबर यहां मेरे यारो

बहुत तेज़ होती है हर काट इनकी
यह नशतर न बातों के दिल में उतारो

कई मरहले आएंगे रास्ते में
मगर ज़िन्दगी मुस्कुरा कर गुज़ारो

बहुत हो चुकीं मौत की दास्तानें
करो बात जीने की ए ग़म गुसारो

न बहलेगा झूठी तसल्ली से यह दिल
फ़क़त तुम मुहब्बत से इसको पुकारो

"हताश" ऐसी आवारागी ले न डूबे
अभी वक़्त है ख़ुद को कुछ तो सुधारो

⊙

एक दिन ऐसा भी आएगा ज़रूर
दौर वहशत का भीत जाएगा ज़रूर

मन्ज़िले मक़सूद मिल ही जाए गी
अज़्मे महकम रंग लाएगा ज़रूर

हक़ परस्ती को जो रखेगा अज़ीज़
ज़िन्दगी भर मार खाएगा ज़रूर

देखना मुंह फेर लेंगे सब यहां
तुम पे ऐसा वक़्त आएगा ज़रूर

हम बतादेंगे कि हम क्या चीज़ हैं
वक़्त वो दिन भी दिखाएगा ज़रूर

आपका हुसने तव्वजुह चाहिए
लम्हा लम्हा गुनगुनाएगा ज़रूर

मुद्दतों से हम हैं जिसके मुन्तिज़र
देखना इक दिन वो आएगा ज़रूर

वक़्त का अंदाज़ा है यह ए "हताश"
तुम को दीवाना बनाएगा ज़रूर

⊙

कितनी उमीद लिए घर में वो आया होगा
उसने माज़ी को बहर तौर भुलाया होगा

ख़ुद पे इतराता है किस दर्जा कोई दहशत गर्द
ख़ून खंजर से लोगों का बहाया होगा

गै़र मुमकिन था कि वो हाथ कभी फैलाता
भूख ने उसको बहर तौर सताया होगा

खो गए लोग कहाँ बस्ती को वीरां करके
उसी मन्ज़र ने उसे ख़ूब रुलाया होगा

किस को मालूम है वो दिल पे जो बीती होगी
वाक़िआ कोई भी जब याद उसे आया होगा

ऐसे हालात में मिलता कोई राहगीर कहां
उसने हर राह में कांटों को उ़गाया होगा

अपने वाइदे को बहर हाल निभा देता वो
ऐने मुमकिन है उसे याद न आया होगा

कितनी ही महफिलें हैं भूल गई हैं जो "हताश"
दौस्तों ने भी उन्हें दिल से भुलाया होगा

◉

ज़माना ऐसे सदियों से रवां है
ज़मीं पावँ में सर पर आसमां है

कसक है, दर्द है, मायूसियां हैं
मुहब्बत में यह कैसा इमतिहां है

महकते थे हज़ारों फूल जिन पर
उन ही शाख़ों पे अब सूना समां है

हैं कितनी मुश्किलें राहों में लेकिन
मुसाफिर जानिबे मन्ज़िल रवां है

चला हूँ छोड़कर जिस गुलिस्तां को
इसी में इक मेरा भी आशयां है

वफ़ाओं के इवज़ है बे वफ़ाई
मगर कैसा यह दस्तूरे जहां है

थी घर में किसक़द्र पेहचान उसकी
निकल कर घर से अब वो बे निशां है

बहारों का समां रहता था जिस में
उसी गुलशन में अब दौरे खिज़ां है

"हताश" उसको समझ बैठा है सब कुछ
हकीक़त में वो उस से बदगुमां है

कहां गया वो मन का सरूर
दिल की दुनिया है बे नूर

आदमी मरजाने की ख़ातिर
मौत के हाथों है मजबूर

हुसन की तो तुम बात ही छोड़ो
इश्क़ भी है कितना मग़रूर

कहां है अब पुरखों की निशानी
घर है वो मुझ से कितनी दूर

इन के भरोसे पर क्या रहना
ख़्वाब हुए हैं चकना चूर

वो जो हम से ख़फ़ा ख़फ़ा हैं
बात है कोई ऐसी ज़रूर

सर पे पड़ी थी जो घर छूटा
अपना इस में क्या था क़सूर

जो भी करे वो फ़ैसला बर हक़
मुझ को है सब कुछ मन्ज़ूर

कहा सुना जो उसने "हताश"
उसको करलेना मन्ज़ूर

⊙

काश! कोई अपनाए मुझे
और न अब तड़पाए मुझे

यह अनजानी राहें हैं
आप कहां ले आए मुझे

बरसों तक मैं भटका हूँ
और न वो भटकाए मुझे

रहता है जो विरदे ज़ुबां
नाम तेरा तड़पाए मुझे

सब को अजनबी लगता हूँ
रस्ता कौन दिखाए मुझे

दर्द सुलगता रहता है
इस से कोई बचाए मुझे

मैं क्यूं बुझा सा रहता हूँ
कौन यह बात बताए मुझे

अपने शहर को देख सकूं
कोई वहां ले जाए मुझे

भूली बिसरी यादों के
ड़सते हैं अब साये मुझे

अपने घर को चलें "हताश"
मजदा कोई सुनाए मुझे

⊙

ज़ुबां चुप न लब पर कोई बात थी
ग़ज़ब की भयानक वो इक रात थी

तरसते थे इक बूंद पानी को लोग
ख़ुदा जाने कैसी वो बरसात थी

मिले भी तो इक तिशनगी सी रही
बड़ी मुख़्तसर सी मुलाक़ात थी

जो देखा उसे हमने नज़दीक से
चमकती थी जो वो तो इक धात्र थी

हुई उस से मजरूह ख़ुददारियां
करम भी तरा एक ख़ैरात थी

जफ़ा के भी पहलू थे इस में निहां
तेरी हर अदा में कोई बात थी

तेरी ज़ात पर तबसरा कर सके
कहां मेरे दिल की यह औक़ात थी

कटी ज़िन्दगी अपनी ऐसे "हताश"
कि जैसे यह मुफ़लिस की बारात थी

⊙

वो न ग़म से कभी घबराए उसे कह देना
वो जो बे चैन नज़र आए उसे कह देना

झूठ फिर झूठ है कब तक यह सहारा देगा
वो जो हक़ बात को झुटलाए उसे कह देना

दिल पे जब चोट लगे मुंह से न तुम उफ़ करना
आंख में पानी जो भर आए उसे कह देना

कोई बहरूप हो, हो जाता है ज़ाहिर अकसर
यानी बहरूप से कतराए उसे कह देना

वो सरे बज़्म हक़ीकत को करे जब भी बयां
दिल में हर गिज़ न वो पछताए उसे कह देना

यह ज़माना है यहां ठोकरें मिलती हैं मुदाम
हर क़दम पर वो संभल जाए उसे कह देना

यह ज़रूरी नहीं सहरा में चले लू ही फ़क़त
रेत मोती कभी बन जाए उसे कह देना

दिल के दामन से बहर तौर झटक दे वो "हताश"
उसको जब भी मेरी याद आए उसे कह देना

आज माज़ी की याद क्या आई
ज़िहन में गूंज उठी है शहनाई

ख़ूब है उसकी बज़्म आराई
जिस को रास आगई तनहाई

आरज़ूओं ने ली है अंगड़ाई
जब नज़र उस नज़र से टकराई

इस जहां में कोई नहीं है अपना
बार हा दिल को बात समझाई

ज़िन्दगी में महक सी फैल गई
जब चली आरज़ू की पुरवाई

आप का क़रब क्या मिले मुझको
मेरी क़िसमत में जब है तनहाई

कोई मेरे सिवा नहीं है "हताश"
किस जगह आज ज़िन्दगी लाई

⊙

आगया है मुझ पे हर इल्ज़ाम झूठ
हो गया हूँ हर जगह बदनाम झूठ

मौत तो है ज़िन्दगी की इब्तिदा
ज़िन्दगी का मौत है अंजाम झूठ

जानते हैं लोग मेरे नाम को
मैं हूँ बज़्मि शेर में गुमनाम झूठ

अब नहीं हक गोई का कोई रिवाज
बोलते हैं लोग सुबहो शाम झूठ

उसके सर हैं हर किस्म की तोहमतें
आजका इन्सान है ख़ुश नाम झूठ

सच नज़र आए तो हम सजदा करें
हम ने देखा है यहाँ हर गाम झूठ

मुस्तहिक़ इनआम के जो हैं "हताश"
उनको मिलता है यहां इनआम झूठ

⊙

अपनी ही दुनिया में जो मसरूर थे शामो सहर
दूर अब अपने घरों से लोग हैं वो दरबदर

मैकदे की सिमत आने का इरादा तो न था
ख़ुद बख़ुद ही मेरे पावँ खींच लाए हैं इधर

फाइदा क्या तू ने इस दुनिया को पहुंचाया नहीं
दाद के क़ाबिल सही बे शक तेरी फ़िक्रो नज़र

लड़ खड़ा जाता हूँ सुन कर भूरवे बच्चों की सदा
यह गुज़र जाती है अकसर मेरा सीना चीर कर

कोई तो इन आंसओं की क़द्र करता ए "हताश"
मिल गए हैं खाक में बे बहा लालो गुहर

⊙

यह किसी तौर भी गुज़रती नहीं
क्या कहों ज़िन्दगी संवरती नहीं

मुझको तसलीम है कि पीता हूँ
बुरी आदत है यह सुधरती नहीं

बात बनके भी बन नहीं पाती
यह बिगड़ती तो है संवरती नहीं

कौन उसको यहां पुकारेगा
मेरी आवज़ तो उभरती नहीं

ज़िन्दगी तो बिगड़ती है हर गाम
क्या संवारों इसे संवरती नहीं

मेरी बातों का क्या असर उस पर
बात दिल में कोई उतरती नहीं

ए "हताश" उस नज़र के हैं कुर्बान
मुझ से कमबख़्त बात करती नहीं

⊙

तेरे दीवाने हैं जो उनको सताता क्यों है
यह बता अपनों को इस दर्जा रुलाता क्यों है

दिल में जो बात है वो साफ़ उभर आएगी
ग़म के परदे में उसे ऐसे छुपाता क्यों है

कौन से मोड़ पे आकर मुझे छोड़ा तुम ने
दिल में एहसासे–वफ़ा डूबता जाता क्यों है

अबर आलूद फ़िज़ा अर्श पे तारे भी हैं गुम
ऐसे आलम में कोई राह दिखाता क्यों है

भूलना चाहूँ तो हरगिज़ न तुझे भूल संकू
यादे–माज़ी की तरह मुझ को सताता क्यों है

उसने तख़लीक़ किया आप ही ज़िस मन्ज़र को
उसी मन्ज़र पे अब वो अश्क बहाता क्यों है

तेरा अपना हूँ मैं तू मुझको समझता है अलग
दिल में जो बात है वो मुझ से छुपाता क्यों है

अपने हाथों ही बहाए यह लहू के दरिया
अपने इस फेल पे अब कांप साजाता क्यों है

उसकी यादों के धुन्धलके के सिवा क्या है "हताश"
इक अन्धेरा सा सरेशाम यह छा जाता क्यों है

⊙

किस आरिज़ू से फूल चमन में उगाए थे
हमने हज़ार रंग के नक़्शे बनाए थे

जो आज एक सहरा की सूरत है दोस्तो
उस गुलिस्तां में हम भी कभी चहचहाए थे

ख़ुशियों का कहीं नाम न था दूर दूर तक
फैली हुई निगाहों में हसरत के साए थे

इक इन्कलाबे–वक़्त ने बिखरा दिया उन्हें
आंखों में हमने सैंकड़ों सपने सजाए थे

आता था याद जब वो ज़माना, वो महफ़िलें
सौ बार अपने हाल पर आंसू बहाए थे

सुनते हैं उस पे छाया है रंगे फर्दगी
जिस ज़िन्दगी को हंसता हुआ छोड़ आए थे

ज़िन मन्ज़रों से बिछड़े हुए उम्र हो गई
मंज़र वो दिल को फिर भी बहुत याद आए थे

जिन वादियों में यासियत बिखरी है चार सू
उन वादियों में हमने कभी गीत गाए थे

घर से निकल के क्या कहीं इक चुप सी लग गई
आता है याद हम भी कभी मुस्कुराए थे

किस से पनाह मांगते हम लोग ए "हताश"
अपने ही घर में इक अजब वहशत के साए थे

⊙

आप से जब भी मैं दूर रहजाओंगा
सोचता हूँ कि कैसे सकूं पाओंगा

कौन है अब शनासा मेरा शंहर में
किस से मैं हाल इस दिल का कह पाओंगा

कर दिया है फ़रामोश जिस गावँ ने
देखना एक दिन उसको याद आाओंगा

उसने तड़पाया मुझको यह सच है मगर
ग़ैर मुमकिन है मैं उसको तड़पाओंगा

अपने हक़ से अगरचि मैं महरूम हूँ
तेरा हक़ है जो तुझ को दिला पाओंगा

एक छोटा सा ज़र्रा हूँ मैं दहर में
वक़्ते मुश्किल मगर फिर भी काम आओंगा

ख़ूब हैं मुझ पे एहसान गो आप के
किसतरह बोझ इतना उठा पाओंगा

जिस चमन में जला है मेरा आशयां
देखना तुम, वहीं फिर पलट जाओंगा

उसकी इक इक मस्सरत से रिशता मेरा
मैं न हरगिज़ अब उसे रुला पाओंगा

ए "हताश" उस को इतना बता दे कोई
जिस क़द्र वो भुलाएगा याद आओंगा

⊙

मिली है ज़िन्दगी वो जिस पे शर्मसार हूँ मैं
मेरी बसात है क्या राह का ग़ुबार हूँ मैं

बहुत ग़रीब सही मैं मगर हक़ीर न जान
मेरा यक़ीन कर फ़र्दा का एतबार हूँ मैं

हसीन वादियां हैं जिनको छोड़ आया हूँ
पलट के फिर वहीं जाने को बेक़रार हूँ मैं

मुझे मिली नहीं तौफ़ीक़ कोई खिदमत की
ख़ुद अपने हाले शिकस्ता पे शर्मसार हूँ मैं

पुरानी रस्मों का हरगिज़ नहीं हूँ मैं क़ाइल
नए समाज से किस दर्जा हमकिनार हूँ मैं

मैं बे नियाज़ हूँ दुनिया के शोरोशर से "हताश"
कि कोहसार के दामन में आबशार हूँ मैं

◉

कौन सुने वीरान से इन सहराओं में मेरी आवाज़
खो सी गई है दुनिया की आवाज़ों में मेरी आवाज़

यह कुहना रस्में गावँ की, यह फरसूदा से बंधन
उभर न पाई ख़ुद मेरे ही गांवो मे मेरी आवाज़

अब गिरदाब है, लहरे है या मोजू के तूफान
डूब गई कितने गहरे दरियाओं में मेरी आवाज़

तुम से ऐसा मुमकिन हो तो मुझ पर यह एहसान करो
जज़्ब करो तुम अपनी मस्त निग़ाहों में मेरी आवाज़

मिल न संकूगा अब तो किसी भी मोड़ पर ढूंढो लाख मुझे
सुन पाओगे तुम पीपल की छावँ मेरी आवाज़

अब तो रोक न पाएगा हरगिज़ भी कोई इसे "हताश"
फैल चुकी है अब तो गांव गांव मैं मेरी आवाज़

सैंकड़ों तूफ़ान इस सर से गुज़र जाने के बाद
अब वो अपनाने लगे हैं हम को ठुकराने के बाद

इस से बहतर था यही हर बात करते सोंचकर
किस लिए आंसू बहाते है वो पछताने के बाद

हम जिन्हे अपना समझ बैठे थे अपने न थे
जोश आया दिल को लेकिन चोट सी खाने के बाद

अजनबी राहों पे हम तो गिरते पड़ते चल दिए
मिल गई है हम को मन्ज़िल ठोकरें खाने के बाद

दिल को तडपाने से क्या कोई कसर बाकी रही
दिल क्यूँ चुप चाप से हैं दिल को तड़पाने के बाद

आप शायद अपनी धुन में और ही आलम में थे
आप को आवाज़ दी राहों में खो जानेके बाद

कैसी दुनिया है यह कैसे लोग हैं प्यारे "हताश"
दूर हो जाते हैं दिल से दिल के पास आने के बाद

⊙

इक ठिकाना था गुलिस्तां में जलाया कब का
वक़्त ने वक़्त ने नामो निशां मेरा मिटाया कब का

तुम ने जीने के सिखाये हैं सलीके कितने
दिल में जो ज़ख़्म भी था हमने छुपाया कब का

उसने भी देख के मुंह फेर लिया है हम से
हमने भी हाले दिल ज़ार सुनाया कब का

मेरा भी अपने पराए से कोई रब्त नहीं
मुझ को भी छोड़ गया अपना पराया कब का

ऐसा लगता है कि हम ख़ुद कोभी अब भूल गए
हादिसा कोई भी माज़ी का न याद आया कब का

उस की जो बात भी है उस में है इक नर्म रवी
ढल चुका उसके तकब्बुर का वो साया कब का

मुझको अग़यार से शिकवा नहीं है कोई "हताश"
अब तो अपनों ने ही है मुझको भुलाया कब का

⊙

जफ़ा व मक्र को उसने वफ़ा का नाम दिया
हवा में ज़हर था जिसको सबा का नाम दिया

जो हक़ की पूछिए मुझ को पिलादिया ज़हराब
मेरे मसीहा ने लेकिन दवा का नाम दिया

बदल दिए हैं शिकायत के मैं ने मानी ही
जो लब पे आई तो मैं ने दुआ का नाम दिया

तुम्हारे हाथों पे जितने निशां बाक़ी हैं
लहू की छींटों को हमने हिना का नाम दिया

अजीब बात है हर कोई बिरहना सा है
ज़माने ने इसको हया का नाम दिया

मैं मर मिटा हूँ उसे इसका एतराफ़ नहीं
कि उसने मेरी वफ़ा को जफ़ा का नाम दिया

अजीब लोग थे किस से कहें यह प्यारे "हताश"
हुई लबों को जो जुंबिशे, सदा का नाम दिया

◉

ग़मों के साए में यह ज़िन्दगी गुज़ारी है
ज़रा बताना तुम्हें इस की जानकारी है

दराज़ रहता है हर वक़्त इसका दस्ते तलब
कुछ ऐसे लगता है, इन्सान इक भिखारी है

तमाम रात क़यामत से कम न थी हरगिज़
तमाम रात इन आंखों में जो गुज़ारी है

बिखेरने देंगे न इस को किसी भी सूरत हम
हज़ारों मुश्किलों से ज़िन्दगी संवारी है

तुम आसमां के मालिक हो मानते हैं मगर
ज़मीन पे हक़ है हमारा ज़मीन हमारी है

अजीब आलमे मस्ती में खो गए हैं हम
निग़ाहो दिल पे मुहब्बत का कैफ़ तारी है

हमारे वासते है शहर अजनबी सा "हताश"
हम ने दशत में यह ज़िन्दगी गुज़ारी है

◉

यह तमन्ना है हम को जीने दो
ज़ख्म दिल में हैं जो भी सीने दो

जिस से यकसर चमक उठे माहौल
हमको कुछ ऐसे आबगीने दो

हम ग़मे ज़िन्दगी के मारे हैं
भय के साए में हम को जीने दो

वो तुम्हें उम्र भर दुआ देंगे
तिशना लब हैं जो उनको पीने दो

हम पहुंच जाएं अपनी मन्ज़िल तक
अज़्म के हम को ऐसे ज़ीने दो

और कुछ मांगते नहीं हम लोग
अपना हक़ है, यह हम को जीने दो

तशना लब किसक़द्र है तेरा "हताश"
अपनी आँखों से इस को पीने दो

⊙

कितना सरूर ज़िन्दगी को दे गई किताब
रहती है यूं तो हर घड़ी ख़ामोश सी किताब

इक इक क़दम पे राह दिखाती है मुदाम
हक़ यह है अपने साथ हमेशा रही किताब

असरार इस ने खोल दिए हैं जहां के
फ़र्दा को दी गई है कभी आगही किताब

उपदेश जिस में कृष्ण ने अर्जन को है दिया
हमको अज़ीज़ सब से रही है वही किताब

इल्मो अदब से जिसको ज़रा भी नहीं लगाओ
उस शख्स के लिए भला किस काम की किताब

इसके सहारे कट गई यह ज़िन्दगी "हताश"
दुनिया को क्या बताएं हमें क्या दे गई किताब

⊙

शमए–उमीद बहर तौर जलाए रखना
ज़िन्दगी के लिए माहौल बनाए रखना

यह दरिन्दे जो तशद्दुद पे उतर आए हैं
आईना ऐसे दरिन्दों को दिखाए रखना

आग नफ़रत की जो भड़के तो जलादेती है
अपने दिल में नुम मुहब्बत को बसाए रखना

कितना गहरा है अंधेरा न भटक जाए कोई
यह गुज़ारिश है चिराग़ों को जलाए रखना

ऐन मुमकिन है वह फुर्सत में इधर आ निकले
उसकी राहों में तू आँखों को बिछाए रखना

क्या करूं अब मेरे आदात में यह शामिल है
हर घड़ी दिल में कोई आस लगाए रखना

ज़िन्दगी के लिए यह कितना ज़रूरी है "हताश"
हौसला दिल का हर हाल़ में बनाए रखना

⊙

अदा से मुस्कुराएं क्या करोगे
वो ऐसे पेश आए क्या करोगे

तुम्हारे दिल में जो रच बस गया है
वो तुम से रूठ जाए क्या करोगे

मय व साग़र से तौबा ख़ूब लेकिन
जो बादल घिर के आए क्या करोगे

मुहब्बत के जहां में कोई रह रव
जो रस्ता भूल जाए क्या करोगे

भुला पाओगे उस को दिल से लेकिन
वह फिर भी याद आए क्या करोगे

समझ बैठे हो जिस को ग़ैर यकसर
तुम्हें अपना गिनाए क्या करोगे

"हताश" नीम जां से पूछना यह
अगर वो याद आए क्या करोगे

◉

दिल तेरे ग़म से मेरा बहल जाएगा
खाके ठोकर कभी तो संभल जाएगा

लाज़मी है कि तुम इस से बच के रहो
अजदहा नफ़रतों का निगल जाएगा

इसकी अज़मत का एहसास होगा उसे
ग़म के सांचे में जब भी वो ढल जाएगा

हम हैं इक फूल लेकिन सितमकार वो
अपने पांव के नीचे मसल जाएगा

देखना जान के लाले पड़ जाएंगे
उसकी आंखों का जादू जों चल जाएगा

सैंकड़ों इम्तिहान उसको दर पेश हैं
मुस्कुराकर वो लेकिन निकल जाएगा

ए "हताश" उसकी मन्ज़िल क़रीब आएगी
जो लड़ खड़ा कर संभल जाएगा

◉

कश्मीर में आतंकवाद का मौसम आरंभ होने से पहले तक जिस प्यारे 'हताश' को मैं जानता था, वह उस कलाकार से भिन्न है, जिसकी मैं इस समय बात कर रहा हूँ....... ये निस्संदेह एक सर्जनात्मक कलाकार हैं। इस के दिल से दर्द छलक रहा है और स्वभाव से ये इतने कोमल हैं कि गहरी नींद में सोए हुए हताश को पतझड़ से ग्रस्त चिनार से गिरा हुआ पत्ता भी जगा सकता है........

रसते बसते घरों को छोड़ आए
है फ़साना मुख्तसर अपना
हो ही जाएंगे सांस सब पूरे
कट ही जाएगा सफ़र अपना।

हताश बहुत छोटी बात कहते हैं लेकिन जिस अंदाज़ से कहते है उससे उसके अर्थ गांभीर्य में इज़ाफा हो जाता है। ....प्यारे हताश की यह कविता घाटी के समकालीन हालात से बेहद प्रभावित है इसलिए (इनके) शेरों पर कहीं कहीं भावना छा जाती है और कवित्व कम। लेकिन यह सब शायर की वृत्तियों का coercion है.......

फय्याज़ शहरयार
निदेशक, दूरदर्शन केंद्र
जम्मू

प्यारे हताश के कविता संग्रह "खोये हुए क्षण" के शेरों की गहराइयों में डूब–डूब जाने का मन करता है। ज़बान खुद–ब–खुद इन शेरों को गुन गुनाती रहती है। संग्रह के अधिकांश शेरों में व्यक्त भावों एवं विचारों ने यह मनवाया कि ये संतुलित है, रुचिकर है तथा इन में समयुक्तता है। संग्रह के गज़लों के अशआर विभिन्न प्रकार के भावप्रसूनों की लड़ी हैं, जो रंगामेज़ भी है, कंटीले भी और सुगन्धित भी।

युगीन सत्य के उद्घाटन के साथ–साथ एक गंभीर एवं सुलझे हुए दार्शनिक की तरह कवि संसार की वास्तविकता से भी पाठकों को अवगत कराते हैं। कवि ने उग्रवाद तथा तदजन्य भय को झेला है, झेल रहे है, अतः इन की गज़लों में इस से संबन्धित अशआर का होना स्वाभाविक है। कवि संसार की हर शय को नाशवान तथा शरीर को "किराये का मकान" कहते है।

प्रो॰ पृथ्वीनाथ मधुप